International Journal of Applied Research

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(8): 257-261
www.allresearchjournal.com
Received: 15-05-2023
Accepted: 19-06-2023

डॉ. मनीष कुमार त्रिपाठी
पी–एच.डी. (शिक्षा), अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. मनीष कुमार त्रिपाठी
पी–एच.डी. (शिक्षा), अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

लखनऊ जिले के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. मनीष कुमार त्रिपाठी

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श के रूप में चयनित लखनऊ जिले के सभी विकासखण्डों से 4–4 विद्यालय कुल 32 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालयों से 5–5 छात्र–छात्राएँ कुल 320 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से अधिगम स्तर ज्ञात करने के लिए किया गया है। शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है। शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कूटशब्द : लखनऊ जिला, हाई स्कूल स्तर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020, प्रभाव, विद्यार्थी, अधिगम स्तर

1. प्रस्तावना

शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया होने के कारण निरन्तर विकसित व विभिन्नीकृत होती रही है तथा उसका प्रसार क्षेत्र लगातार बढ़ता रहा है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान को स्पष्ट करने व कायम रखने, समकालीन चुनौतियों का सामना करने व राष्ट्रीय जीवन के संवर्धन के लिये अपनी विशिष्ट शिक्षा प्रणाली विकसित करता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के भारतीय शिक्षा के इतिहास में 1964 के राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1964–66 तथा 1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतीक था। इस पर अमल भी होना शुरू हो गया था तथा कई प्रान्तों ने अपने – अपने ढ़ंग से 10 + 2 + 3 की शिक्षा संस्थान लागू कर दी थी। त्रिभाषा सूत्र, प्रान्तों में कृषि, व्यवसायिक एवं तकनीकी शिक्षा, विज्ञान शिक्षा और वैज्ञानिक शोधों के लिये विशेष प्रावधान किये जाने लगे थे तथा शिक्षा में सुधार हेतु अन्य कार्य भी शुरू कर दिये गये थे।

शिक्षा क्षेत्र में व्यापक बदलावों के लिए केंद्र सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को मंजूरी दे दी है। लगभग तीन दशक के बाद नई शिक्षा नीति को मंजूरी दी गई है। इससे पूर्व 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई गई थी और 1992 में इसमें संशोधन किया गया था। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति से पूर्व देश में मुख्य रूप से दो ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई थी। स्वतंत्रता के बाद पहली बार 1968 में पहली शिक्षा नीति की घोषणा की गई। यह कोठारी कमीशन (1964–1966) की सिफारिशों पर आधारित थी। इस नीति को तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार ने लागू किया था। इसका मुख्य उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना और देश के सभी नागरिकों को शिक्षा मुहैया कराना था। बाद के वर्षों में देश की शिक्षा नीति की समीक्षा की गई। वहीं देश की दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति मई 1986 में मंजूर की गई। जिसे तत्कालीन राजीव गांधी सरकार लेकर आई थी। इसमें कम्प्यूटर और पुस्तकालय जैसे संसाधनों को जुटाने पर जोर दिया गया। वहीं इस नीति को 1992 में पीवी नरसिंह राव ने संशोधित किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य शिक्षा की पहुँच, समानता, गुणवत्ता, वहनीय शिक्षा और उत्तरदायित्वों जैसे मुद्दों पर विशेष ध्यान देना है। छात्रों को जरूरी कौशल एवं ज्ञान से लैस करना और विज्ञान, टेक्नोलॉजी, अकादमिक क्षेत्र और इन्डस्ट्री में कुशल लोगों की कमी को दूर करते हुए देश को ज्ञान आधारित सुपर पावर के रूप स्थापित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020), जिसे 29 जुलाई 2020 को भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था, भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। नई शिक्षा नीति 2020 ने पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, की जगह ले ली है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा के साथ–साथ ग्रामीण और शहरी भारत दोनों में व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए एक व्यापक रूपरेखा तैयार करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य 2021 तक भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है और यह नीति 2020 भारत को बदलने में सीधे प्रकार से योगदान प्रदान करती है और भारतीय लोकाचार में निहित शिक्षा प्रणाली को देखती है। इसका उद्देश्य धर्म, लिंग, जाति या पंथ के किसी भी भेदभाव के बिना, सभी को बढ़ने और विकसित होने के लिए एक समान मंच प्रदान करना और सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके मौजूदा जीवंत ज्ञान समाज को बनाए रखना और उसकी देखभाल करना है। यह भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने की दिशा में भी एक कदम है। इस नीति में यह परिकल्पना की गई है कि हमारे संस्थानों के समान पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को, छात्रों में मौलिक कर्तव्यों के प्रति सम्मान की भावना पैदा करनी चाहिए और संवैधानिक मूल्यों, अपने देश और एक बदलती दुनिया के साथ एक संबंध पैदा करना चाहिए। इस नीति का दृष्टिकोण शिक्षार्थियों के बीच ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास, बुद्धि और कर्म के साथ न केवल विचार बल्कि मूल्यों और दृष्टिकोणों में भी विकास करना है, जो मानव अधिकारों, सतत विकास और जीवन का समर्थन करते हैं और वैश्विक कल्याण के लिए एक जिम्मेदार प्रतिबद्धता, जिससे वास्तव में एक वैश्विक नागरिक प्रतिबिंबित होता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल लखनऊ जिले वरन् सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के हाई स्कूल स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का क्रियान्वयन का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा रटने वाले विषयों, समय सीमा को पूरा करने और अंक प्राप्त करने से कहीं अधिक है, लेकिन शिक्षा का वास्तविक अर्थ ज्ञान, कौशल, मूल्यों को प्राप्त करना और उस क्षेत्र में निरंतर कार्य करना और प्रगति करना है, जिसमें व्यक्ति अपनी रुचि की खोज करता है। वास्तविक तथ्यों पर आधारित इस अध्ययन के निष्कर्ष समाज के हित में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इस अध्ययन क्षेत्र में पूर्व अनुसंधान की कमी के कारण यह शोध मॉडल इस अध्ययन के लिए प्रस्तावित है। शोधकर्ता इस वर्तमान अध्ययन के सभी पहलुओं को समझाने का प्रयास करेगा।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

1. शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है :–

1. शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला लखनऊ है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – मॉल, मलिहाबाद, चिनहट, बक्शी का तालाब, काकोरी, गोसाईगंज, सरोजनी नगर और मोहनलाल गंज है। अतः जिला अन्तर्गत हाई स्कूल स्तर के विद्यालय इस अध्ययन में सम्मिलित किए गए है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान, विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

सूचना या आंकड़े प्राप्त करने हेतु स्वनिर्मित अधिगम परीक्षण पत्रक का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित लखनऊ जिले के सभी विकासखण्डों से 4–4 विद्यालय कुल 32 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालय से 05–05 छात्र–छात्राएँ कुल 320 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से अधिगम स्तर ज्ञात करने हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका

विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], राय, इंद्रनील (2019)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], खुल्लर, के.के. (1988)[4], गहरवार मिथलेस सिंह (2005)[5], चतुर्वेदी, आर.सी. एवं मिश्रा, शिवानी (2007)[6], सिंह, बिरेन्द्र एवं देवी कुकन (2022)[7], पाठक, सच्चिदानंद (2021)[8], साईद, असलम एवं शुक्ला, प्रतिमा (2022)[9] एवं त्रिपाठी, डॉ.मनीष कुमार (2023)[10]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ समुद्र तल से 123 मीटर ऊपर स्थित है। यह 26°30′– 27°10′ उत्तरी अक्षांश और 80° 30′– 81°13′ पूर्वी देशांतर पर स्थित है। लखनऊ का क्षेत्रफल 2528 किमी^{2} है। यह पूर्वी तरफ जिला बाराबंकी से, पश्चिमी तरफ जिला उन्नाव से, दक्षिणी तरफ जिला रायबरेली से और उत्तरी तरफ सीतापुर और हरदोई जिलों से घिरा हुआ है। शहर गोमती नदी के उत्तर–पश्चिमी तट पर स्थित है, जो शहर से होकर बहती है। इस नदी की कुछ सहायक नदियाँ कुकरैल, लोनी, बीटा आदि हैं। सई नदी शहर के दक्षिण से बहती है और पूर्व में रायबरेली जिले में प्रवेश करती है। जिले में 8 विकासखण्ड है – मॉल, मलिहाबाद, चिनहट, बक्शी का तालाब, काकोरी, गोसाईगंज, सरोजनी नगर और मोहनलाल गंज है।

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ समुद्र तल से 123 मीटर ऊपर स्थित है। यह 26°30′– 27°10′ उत्तरी अक्षांश और 80°30′– 81°13′ पूर्वी देशांतर पर स्थित है। लखनऊ का क्षेत्रफल 2528 किमी 2 है। यह पूर्वी तरफ जिला बाराबंकी से, पश्चिमी तरफ जिला उन्नाव से, दक्षिणी तरफ जिला रायबरेली से और उत्तरी तरफ सीतापुर और हरदोई जिलों से घिरा हुआ है। शहर गोमती नदी के उत्तर–पश्चिमी तट पर स्थित है, जो शहर से होकर बहती है। इस नदी की कुछ सहायक नदियाँ कुकरैल, लोनी, बीटा आदि हैं। सई नदी शहर के दक्षिण से बहती है और पूर्व में रायबरेली जिले में प्रवेश करती है। जिले में 8 विकासखण्ड है – मॉल, मलिहाबाद, चिनहट, बक्शी का तालाब, काकोरी, गोसाईगंज, सरोजनी नगर और मोहनलाल गंज है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. – 1 : शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी 1 : शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (N)		160	160
मध्यमान (M)		51.17	56.22
मानक विचलन (SD)		16.75	12.14
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		3.09	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

$DF = (N_1-1) + (N_2-1)$
$DF = (160-1) + (160-1) = 159+159 = 318$

उपरोक्त सारणी एवं आरेख क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 51.17 है तथा मानक विचलन 16.75 है और हाई स्कूल स्तर पर शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 56.22 है तथा मानक विचलन 12.14 है।

318 DF पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 3.09 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के स्कूल स्तर पर ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना क्र. 1 निरसित होती है।

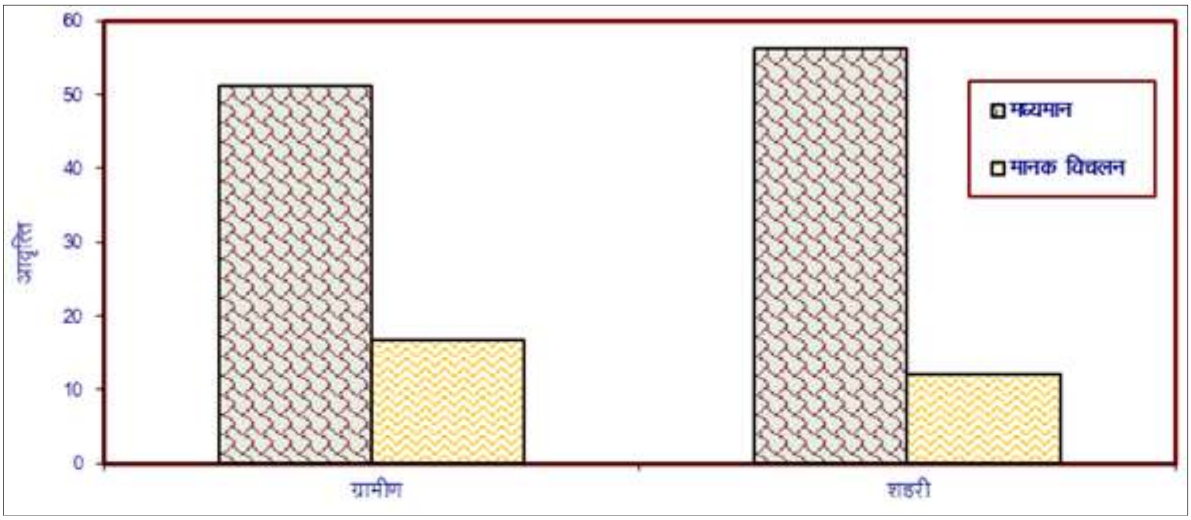

आरेख 1 : शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

परिकल्पना क्र. – 2 : "शोध क्षेत्र में हाई स्कूल स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2 : शोध क्षेत्र में हाई स्कूल स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		160	160
मध्यमान (M)		54.36	55.06
मानक विचलन (SD)		14.18	13.84
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		0.45	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

DF = (N1-1) + (N2-1)

DF = (160-1) + (160-1) = 159+159 = 318

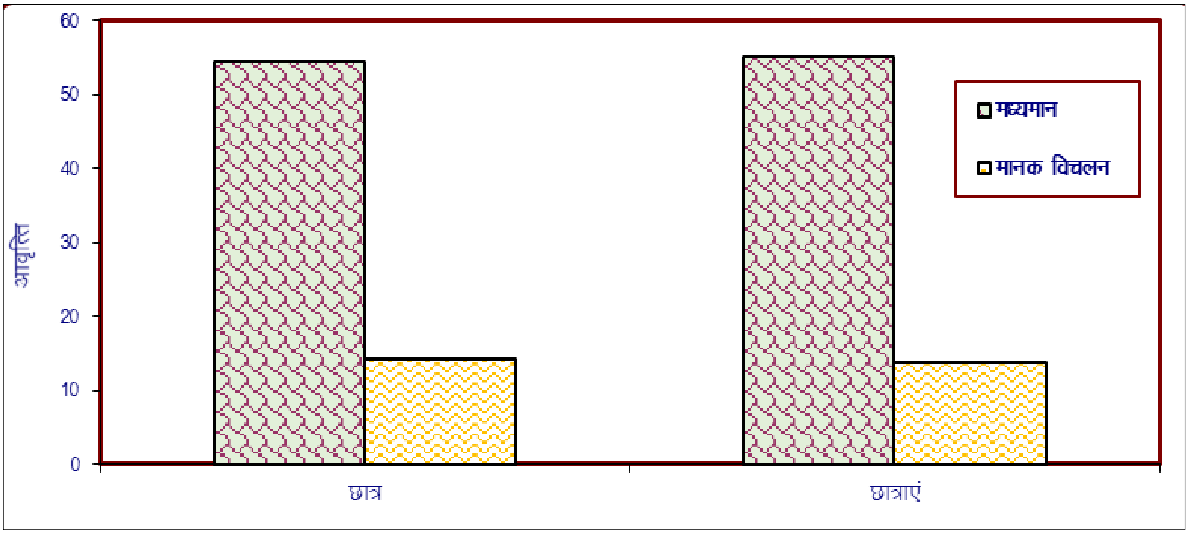

आरेख 2 : शोध क्षेत्र में हाई स्कूल स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

उपरोक्त सारणी एवं आरेख क्रमांक 2 में न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के स्कूल स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत छात्रों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 54.36 है तथा मानक विचलन 14.18 है और छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 55.06 है तथा मानक विचलन 13.84 है।

318 DF पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 0.45 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

शोध क्षेत्र के ग्रामीण हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 51.17 है तथा मानक विचलन 16.75 है और शहरी हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 56.22 है तथा मानक विचलन 12.14 है।

शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 के फलस्वरूप अध्ययनरत छात्रों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 54.36 है तथा मानक विचलन 14.18 है और छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 55.06 है तथा मानक विचलन 13.84 है।

12. संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगराय; c1989.
2. राय, इंद्रनील : राष्ट्रीय शैक्षिक नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन, जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्चेस इन एलाइड एजुकेशन. 2019;16(6):2757-2765.
3. कपिल, एच.के. : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा; c1996.
4. खुल्लर, के.के. : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय; c1988.
5. गहरवार मिथलेस सिंह : रीवा जिले में राजीव गांधी शिक्षा मिशन के शैक्षिक नवाचारो का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययन: अप्रकाशित शोध ग्रंथ शिक्षा, अ.प्र.सिं.वि.वि. रीवा; c2005.

6. चतुर्वेदी, आर.सी. एवं मिश्रा, शिवानी : वर्तमान भारतीय शिक्षा, समाज और भ्रष्टाचार. Research Journal of Social and Life Sciences. 2007.2(01):195-204.
7. सिंह, बिरेन्द्र एवं देवी कुकन : उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि, International Journal of Research and Analytical Reviews. 2022;9(1):17-20.
8. पाठक, सच्चिदानंद : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के महत्वपूर्ण प्रावधानः एक अध्ययन, Multidisciplinary Academic Research. 2021;18(6):216-220.
9. साईद, असलम एवं शुक्ला, प्रतिमा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की चुनौतियों और अवसरों पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology. 2022;2(1):127-131.
10. त्रिपाठी, डॉ. मनीष कुमार : रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research. 2023;9(7):29-32.